Sc

SEAT NO.--------- No. of printed pages – 03

[A-61]

SARDAR PATEL UNIVERITY

S.Y.B.A. (EXTERNAL) EXAMINATION

04 TH APRIL 2019, THURSDAY

02.00 TO 05.00 PM

HINN-2008 अनिवार्य हिंदी (अंग्रेजी रहित)

सुचना – हिंदी में शिरोरेखा अनिवार्य है | Total Marks – 100

प्रश्न- १ सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए | (१६)

(क) आर्थिक कार्यक्रम जितने आवश्यक है उनसे कम महत्व संस्कृत संबंधी कार्यों का नहीं है | दोनों एक ही रथ के दो पहिये हैं, एक-दुसरे के पूरक है | एक के बिना दुसरे की कुशल नहीं रहती |

अथवा

लेखक के 'मैं' और पाठक के 'मैं' के बीच तादात्म्य स्थापित होता है, पर ऐसा शायद बहुत कम स्थितियों में ही होता है कि लेखक का मन्तव्य पाठक ठीक उसी अर्थ में ग्रहण करे सो रचनाकार को अभीष्ट हो |

(ख) नवगति नवलय ताल छन्द नव
नवल कंठ नव जलद मन्द्र रव
नव नभ के नव विहंग वृन्द को,
नव पर नव स्वर दे |

अथवा

जहाँ साँझ-सी जीवन छाया,
ढीले अपनी कोमल काया
नील नयन से ढुलकाती हो,
ताराओं की पाँति घनी रे |

प्रश्न – २ लोकतंत्र के लिए महाजनी सभ्यता हितकारी है या नहीं ? (१६)

अथवा

'साहित्य की मेरी पहचान' निबन्ध के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

प्रश्न – ३ पठित सखियों के आधार पर कबीर का जीवन दर्शन स्पष्ट कीजिए | (१६)

अथवा

'प्रथम रश्मि' कविता का काव्य-सौन्दर्य उद्घाटित कीजिए |

प्रश्न – ४ (क) निम्नलिखित परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : (८)

(P.T.O)

આપણે આપણા જીવનમાં ક્યારેક ભૂલ કરી બેસીએ છીએ. આપણને જ્યારે આપણી ભૂલ સમજાય ત્યારે આપણે તેનો નિખાલસતાથી સ્વીકાર કરવો જોઈએ. આમ કરવાથી આપણું હૃદય નિર્મળ બને છે. ભૂલો કરવી એ પાપ નથી, પરંતુ ભૂલને છુપાવી રાખીએ તે પાપ છે. ગાંધીજીએ તેમના જીવનમાં અનેક ભૂલો કરી હતી. પરંતુ જ્યારે તેમને તેમની ભૂલો સમજાઈ ત્યારે તેમણે તેનો ખુલ્લા મને સ્વીકાર કર્યો હતો. પછી તેમણે એવી ભૂલો ક્યારેય કરી ન હતી. આપણે પણ આપણી ભૂલોનો એકરાર કરતા રહીશું તો આપણી ભૂલોનું પ્રમાણ ઘટી જશે. ભૂલો માટે પસ્તાવો કર્યા પછી આપણું જીવન સુખી બનશે.

(ख)टिप्पणी लिखिए : (०८)

मीडिया की भाषा

प्रश्न – ५ सुचना के अनुसार उत्तर लिखिए :.

(क) सार-संक्षेप लिखिए : (०८)

साहित्य अपने युग का भावात्मक तथा रागात्मक चित्र प्रस्तुत करता है | जो तत्कालीन समाज को दिशा प्रदान करता है | प्रत्येक युग में दो प्रकार के साहित्य का सृजन होता है | एक सामाजिक साहित्य है, जो युग की अनेक समस्याओं का आकलन और मुल्यांकन युग विशेष की प्रचलित मान्यताओं और विचार सरणियों से करता है | ऐसा साहित्य समाज का तत्कालीन दर्पण तो बन जाता है, किन्तु उन समस्याओं का हल प्रस्तुत हो जाने पर साहित्य का मूल्य घट जाता है | ऐसा साहित्य कुछ वर्षों तक युग की परिस्थितियों की माँग का सिंदूर बना रहता है, किन्तु कालान्तर में परिस्थितियों के बदलने पर वह नष्ट हो जाता है | शाश्वत साहित्य अपने युग का प्रतिनिधित्व करते हुए युग-युग की वस्तु बन जाता है | वह किसी काल की सीमा रेखा से बंधा नही होता, अधिकतर ऐसा साहित्य अपने युग में उतना सम्मान नही पता, जितना भविष्य में |

(ख) पल्लवन कीजिए : (०८)

हिंसा बुरी चीज है, पर दासता उससे भी बुरी है |

(ग) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए : (१०)

१.अंधे की लकड़ी
२. अपनी खिचड़ी अलग पकाना
३. उलटी गंगा बहाना
४. उडती चिड़िया पहचानना
५.कलम तोडना
६. कल पड़ना
७.घर बसाना
८.चिराग तले अँधेरा
९.नौ-दो ग्यारह होना
१०.मुट्ठी गरम करना

(घ) निम्नलिखित कहावतों के अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए : (१०)

१.आँख का अँधा नाम नयनसुख
२.चिराग तले अँधेरा
३.नाच न जाने आंगन टेढ़ा

४.दीवार के भी कान होते हैं
५.बहती गंगा में हाथ धोना
६.भागते भुत की लंगोटी भली
७.रस्सी जल गई पर बल न गया
८.सावन हरे न भादों सूखे
९.थोथा चना बाजे घना
१०. अंधों में काना राजा

समाप्त